प्राकृतिक खेती के नियम एवं विस्तार

कृषि कुंभ (जुन, 2022), खण्ड 02 भाग 01, पृष्ठ संख्या 48–49

प्राकृतिक खेती के नियम एवं विस्तार

पंकज, विकेश तंवर, पारस और सुनील

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार हरियाणा

E.mail : pankajdabi347@gmail.com

प्राकृतिक खेती को सामान्यत कम लागत पर की जानेवाली कृषि के रूप में भी किया जाता है किसानो को भूमि की कम होती उपजाऊ शक्ति साथ ही खेत के बंजर होने वाले ने का डर, धुआंधार रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से खेतो में रहने वाले मित्रकीट मारे जाते है, जमींन के निचे पाये जानेवाले सूक्षम जीव की संख्या भी बहुत कम हो रही है इसके साथ मनुष्य के स्वस्थ्य पर रासायनिक उर्वरको का बुरा प्रभाव पड़ता है इन्ही सब कारणों ने किसानो का ध्यान प्राकृतिक खेती की तरफ खींचा है प्राकृतिक खेती मुख्य रूप से देसी गाय के गोबर एवं गोमूत्र का प्रयोग करना, रासायनिक कीटनाशक का उपयोग न करना और इस प्रकार की खेती में जो तत्व प्रकृति में उपलबध है उन्हीं को खेती में कीटनाशक के रूप में काम में लिया जाता है अगर कोई भी किसान प्राकृतिक खेती को अपनाना चाहता है तो इन बातो को ध्यान में रखना जरुरी है जीवामृत, घनजीवामृत तथा जामन बीजामृत तैयार करना, जीवामृत, घनजीवामृत तथा जामन बीजामृत देसी प्रजाति के गोवंश के गोबर एवं मूत्र से बनाया जाता है। इन् सभी के कारण खेत में मिट्टी में पोषक तत्वों की वृद्धि के साथ–साथ जैविक गतिविधियाँ बढ़ती है व गाय के सप्ताह भर गोबर एवं गौमूत्र से बनायीं गयी खाद के घोल का छिड़काव फसलों की वृद्धि में सहायक है और भूमि की उर्वरकता भी कम नहीं होती हैं।

प्राकृतिक खेती में उपयोग किये जाने वाले चार महत्वपूर्ण नियम।

- खेतों में किसी भी प्रकार की जोताई नहीं करनी चाहिए, यानी न तो उनमें जुताई करना, और न ही मिट्टी पलटना।
- किसी भी तरह की रासायनिक उर्वरकों व् खाद का उपयोग न किया जाए।
- निंदाई–गुड़ाई नहीं करनी चाहिए। न तो हलों से और न ही शाकनाशियों के द्वारा।
- किसी भी प्रकार के रसायनों पर बिल्कुल निर्भर न करना ।

प्राकृतिक खेती के लिए उपयोगी तकनीक

जीवामृत की सहायता से भूमि को पोषक तत्व मिलते हैं और ये एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है।

बीजामृत इस का उपयोग नए पौधे के बीज रोपण के दौरान बीज उपचार के माध्यम से किया जाता है और बीजामृत की मदद से नए पौधों की जड़ों को कवक, मिट्टी से पैदा होने वाली बीमारी और बीजों की बीमारियां से बचाया जाता है।

आच्छादन/मल्चिंग का सहारा मिट्टी की नमी का संरक्षण करने के लिए और उसकी प्रजनन शक्ति को बनाए रखने के लिए किया जाता है। मल्चिंग तीन प्रकार की होती हैं जो कि, लाइव मल्च, स्ट्रॉ मल्च और मिट्टी मल्च है।

व्हापासा सुभाष पालेकर द्वारा लिखी गई किताबों के अंदर कहा गया है की पौधे व्हापासा यानी भाप की सहायता से भी बढ़ सकते हैं तथा पौधों

को बढ़ने के लिए ज्यादा पानी की आवश्यकता नहीं होती है।

प्राकृतिक खेती से होने वाले के मुख्य फायदे

- मिट्टी की उपजाऊ क्षमता व् गुणवत्ता में वृद्धि होना।
- किसानो की लागत में कमी आना व् रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होती है।
- फसलों की गुणवत्ता में वृद्धि होती है।
- मिट्टी की जल धारण क्षमता बढ़ती है।
- भूमि के जलस्तर में वृद्धि होती है।
- प्रदूषण व बीमारियों में कमी आती है।

प्राकृतिक खेती विस्तार

प्राकृतिक खेती को देश में एक जन आंदोलन बनाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा आह्वान किया गया और केंद्र सरकार द्वारा प्राकृतिक खेती का बढ़ावा भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति प्रोग्राम की परंपरागत कृषि विकास योजना से किया जा रहा है। आज हिमाचल प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश वह देश के अन्य राज्यों के किसान प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। गुजरात के डांग जिले को पूर्णत प्राकृतिक खेती जिला घोषित किया जा चुका है। प्राकृतिक खेती राज्य बनने के लिए हिमाचल प्रदेश तेजी से कदम बढ़ा रहा है। यहाँ का किसान समुदाय हिमाचल प्रदेश सरकार की ओर से शुरू की गई प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना को बड़ी तेजी से अपने खेत–बागीचों में अपना रहा है सितंबर 2021 तक इस योजना के तहत प्रदेशभर में 1,55,222 किसानों को प्रशिक्षण दिया गया है, जिनमें से 1,41,254 किसान परिवारों ने 1 लाख बीघा से ज्यादा भूमि पर इस खेती विधि को खेती–बागवानी में अपनाया। आँध्रप्रदेश राज्य द्वारा 2015 में प्राकृतिक खेती (ठछथ) की शुरुआत की गयी थी और 2018 में आँध्रप्रदेश राज्य सरकार ने राज्य के कृषि तंत्र को प्रकृतिक खेती में 2022 तक बदलने का लक्ष्य रखा एवं सरकार का यह भी उद्देश्य है की 60 किसानो 2024 व 80 लाख हैक्टर भूमि को 2026 प्रकृतिक खेती में सम्मिलित किया जाये। 2002 में कर्नाटका राज्य रैथ संघ के वरिष्ट नेतृत्व ने श्री सुभाष पालेकर जी के साथ में किसानो को निरंतर कार्यशालाओं व् प्रशिक्षण शिविरो के द्वारा प्राकृतिक खेती बारे में प्रशिक्षित किया गया जिसके कारण लाखो कर्नाटका के किसानो ने खेती यह पद्धति अपनायी गयी। हालांकि प्राकृतिक खेतीको बढ़ावा देने लिये भारत सरकार लोगों को प्रेरित कर रही है परन्तु यह प्रोत्साहन प्रचार और जागरूकता के साथ––साथ आर्थिक स्तर पर भी सहायता होनी चाहिये।

प्राकृतिक खेती का महत्व एवं सुझाव

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में भोजन के अधिकार पर, 2017 में कहा गया है कि ऐसे कई उदाहरण मौजूद हैं जहाँ गाँव प्राकृतिक खेती की ओर आगे बढ़ते हुए ग्रामीण जीवन में रूपांतरण ला रहे हैं तथा शहरों में भी प्राकृतिक खेती के सफल प्रयोग हो रहे हैं तथा कृषि–पारिस्थितिकी विश्व की संपूर्ण आबादी को भोजन उपलब्ध कराने और उसका उपयुक्त पोषण सुनिश्चित करने के लिये पर्याप्त पैदावार देने में सक्षम है। इसके बाद भी प्राकृतिक खेती से कम पैदावार, फसलों में रोग महामारी, और महंगाई इत्यादि जैसी समस्या को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी ने प्राकृतिक खेती के दीर्घकालिक प्रभावों के मद्देनजर वैज्ञानिक प्रमाणीकरण के पश्चात ही देश में खेती की इस पद्यति को बढ़ावा न देने का सुझाव दिया है।